शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 फरवरी 2018
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

मध्यप्रदेश में सार्वजनिक एवं निजी क्षेत्र की बैंकों के द्वारा दिए गए कृषि ऋणों में गैर-निष्पादित सम्पत्तियों की स्थिति का अध्ययन

माया बकोरिया (शोधार्थी)
डॉ.पी.के.सनसे (प्राध्यापक)
भेरूलाल पाटीदार शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
डॉ.चारूल जैन (सहायक प्राध्यापक)
वाणिज्य अध्ययनशाला
देवी अहिल्या विश्वविद्यालय
इन्दौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

भारत एक कृषि प्रधान देश है। देश के कुल कार्य बल का 50 प्रतिशत कृषि पर निर्भर है। कृषि की आवश्यकता को पूरा करने के लिए बैंकों द्वारा अनेक प्रकार का ऋण प्रदान किया जाता है। बैंकों द्वारा प्रदान किये जाने वाले ऋण की वसूली न होने पर वह गैर-निष्पादित सम्पत्तियाँ बन जाती हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में मध्यप्रदेश में सार्वजनिक एवं निजी क्षेत्र की बैंकों के द्वारा दिए गए कृषि ऋणों में गैर-निष्पादित सम्पत्तियों की स्थिति का अध्ययन किया गया है। यह ज्ञात करने का प्रयास किया गया है कि सार्वजनिक एवं निजी क्षेत्र में से किस क्षेत्र में कृषि में गैरनिष्पादित सम्पत्तियाँ अधिक हैं। प्रस्तुत शोध पत्र राज्य स्तरीय बैंकिंग समिति मध्यप्रदेश की वेब साईट से प्राप्त द्वितीयक समंकों पर आधारित है। इस शोध पत्र में मध्यप्रदेश में कार्यरत 21 सार्वजनिक बैंकों, 6 एसबीआई ग्रुप की बैंकों एवं 19 निजी बैंकों के 5 वर्षों (2011-12 से 2015-16) की गैर-निष्पादित सम्पत्तियों का अध्ययन प्रवृत्ति विश्लेषण, अनुपात विश्लेषण एवं विचरण गुणक विश्लेषण से किया गया है।

मुख्य बिंदु- *सार्वजनिक-निजी बैंक, कृषि, ऋण, गैर-निष्पादित सम्पत्तियाँ।*

प्रस्तावना

बैंकिंग प्रणाली किसी भी विकासशील देश की अर्थव्यवस्था के विकास का केंद्र बिन्दु होती है। बैंकों के द्वारा वित्तीय मध्यस्थता एवं भुगतान प्रणाली में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी जाती है। इसीलिए देश की अर्थव्यवस्था में बैंकों की भूमिका अति महत्वपूर्ण है। बैंकिंग संस्थाओं ने अपनी शाखाओं और जमा एवं अग्रिम जैसे कार्यों के द्वारा मुद्रा बाजार में अपनी विशेष जगह बना ली है। बैंकों का प्रमुख कार्य उधार देना एवं जमा स्वीकार करना होता है। बैंकों के द्वारा उधार दी गयी राशि एवं उसका ब्याज यदि समय पर प्राप्त नहीं होता है तो वह बैंकों के लिए गैर-निष्पादित सम्पत्तियाँ कहलाती है।

शोध साहित्य की समीक्षा

रिर्जव बैंक ऑफ़ इण्डिया द्वारा दी गई गैर-निष्पादित सम्पत्तियों की परिभाषा के अनुसार कोई भी सम्पत्ति गैर-निष्पादित सम्पत्ति तब मानी जाती है जब वह बैंकों के लिये आय उत्पन्न करना बंद कर

देती है। गैर-निष्पादित सम्पत्तियाँ वह ऋण है जिसकी ब्याज या मूलधन कि किस्त किसी विशिष्ट अवधि के लिए गत देय हो गई हो।

कोई भी सम्पत्ति गैर-निष्पादित सम्पत्ति तब मानी जाएगी जब

किसी मियादी ऋण के सम्बन्ध में ब्याज या मूलधन की किस्त 90 से अधिक दिनों के लिए 'अति देय' हो गई हो।

ओवर ड्राफ्ट/नकदी ऋण (ओडी/सीसी) के संबंध में खाता 90 से अधिक दिनों के लिए 'आउट ऑफ़ आर्डर' रहा हो।

खरीदे एवं भुनाए गए बिलों के मामले में बिल 90 से अधिक दिनों के लिए 'अति देय' रहा हो।

'अल्पकालीन फसलों' के लिए दिया गया ऋण तब गैर-निष्पादित सम्पत्तियाँ माना जाएगा जब मूलधन की क़िस्त या उस पर ब्याज दो 'फसली मौसम' के लिए 'अति देय' हो गयी हो।

'दीर्घकालिन फसलों' के लिए दिया गया ऋण तब गैर-निष्पादित सम्पत्तियाँ माना जाएगा जब मूलधन की क़िस्त या उस पर ब्याज एक फसली मौसमके लिए 'अति देय' हो गयी हो।

सम्पत्तियों का वर्गीकरण

रिर्जव बैंक ऑफ़ इण्डिया के द्वारा गैर-निष्पादित सम्पत्तियों को तीन भागों में विभक्त गया है :

अवमानक सम्पत्ति

31 मार्च 2005 से, किसी सम्पत्ति को तब अवमानक सम्पत्ति माना जाएगा यदि वह 12 महीने या उससे कम समय के लिए अनर्जक सम्पत्ति के रूप में रही हो। ऐसी सम्पत्ति में ऋण कमजोरी निहित होती है जो ऋण की वसूली को खतरे में डाल देती है और यदि ऋण में निहित कमजोरियों को सही समय पर ठीक नहीं किया जाय तो बैंकों को घाटा उठाना पड़ सकता है।

संदिग्ध सम्पत्ति

31 मार्च 2005 से किसी सम्पत्ति को संदिग्ध के रूप में तभी वर्गीकृत किया जाता है जब वह 12 माह तक अनर्जक सम्पत्ति रही हो। संदिग्ध सम्पत्तियों में वे सभी कमजोरी निहित होती है जो अवमानक सम्पत्ति में होती है। संदिग्ध सम्पत्ति की विशिष्ट बात यह होती है कि इस प्रकार की सम्पत्ति के बारे में ज्ञात तथ्य तथा शर्तें इतनी कम होती है कि ये सम्पूर्ण वसूली को संदेहात्मक बना देती है।

हानि सम्पत्ति

हानि सम्पत्ति वह है जहाँ हानि बैंक द्वारा, आंतरिक या बाहरी लेखा परीक्षकों द्वारा, सहकारिता विभाग द्वारा या रिर्जव बैंक के द्वारा पहचान ली गई हो परंतु हानि की पूरी राशि को अपलिखित नहीं किया गया हो। अन्य शब्दों में हानि सम्पत्ति वह है जिसकी वसूली नहीं की जा सकती हो और अगर वसूली की भी जाती है तो इतनी कम राशि प्राप्त होती है कि उसके बैंक योग्य सम्पत्ति के रूप में रखने का कोई औचित्य न हो भले उसका वसूली मूल्य या निस्तारक मूल्य हो।

गैर-निष्पादित सम्पत्तियों में दिन-प्रतिदिन हो रही वृद्धि बैंकों की एक ज्वलंत समस्या है। बहुत सारे शोधार्थियों, शिक्षण संस्थाओं एवं लेखकों के माध्यम से गैर-निष्पादित सम्पत्तियों के कारणों, गैर-निष्पादित सम्पत्तियों के कारण उत्पन्न होने वाली समस्याओं एवं गैर-निष्पादित सम्पत्तियों को बैंकिंग

पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया गया है। बैकिंग क्षेत्र में गैर-निष्पादित सम्पत्तियों से सम्बन्धित अभी तक किए शोध कार्य निम्नलिखित हैं :

क्र.	वर्ष	लेखक	विषय
1	2017	भूमि मुकुलबाई पारेख	गुजरात में माइक्रोफाइनांस संस्थान की गैर-निष्पादित सम्पत्तियों पर एक अध्ययन
2	2016	एम.डी.इजलकार	मराठवाड़ा ग्रामीण बैंक और गैर-निष्पादित सम्पत्ति-नांदेड़ जिले के विषेष सन्दर्भ में
3	2014	निलेश डागर	भारतीय स्टेट बैंक के वित्तीय विवरणों का एक विष्लेषणात्मक अध्ययन- गैर-निष्पादित सम्पत्तियों के विषेष सन्दर्भ में
4	2012	अनुराग बी. सिंह	वित्तीय प्रदर्षन का एक अध्ययन - भारतीय स्टेट बैंक एवं आईसीआईसीआई का तुलनात्मक अध्ययन
5	2012	सरी देवी	सार्वजनिक क्षेत्र की वाणिज्यिक बैंकों में गैर-निष्पादित सम्पत्ति-स्टेट बैंक समूह का अध्ययन'
6	2012	हस्वीखैरूल मकीन	मराठवाड़ा क्षेत्र में चयनित शहरी सहकारी बैंकों की गैर-निष्पादित सम्पत्तियों का मूल्यांकन
7	2011	एम.चंद्रमा	वाणिज्यिक बैंकों में गैर-निष्पादित सम्पत्तियों का प्रबन्धन -दक्षिण कन्नड़ और बौदुदी जिले में एक अध्ययन
8	2010	महुआ विश्वास	भारतीय स्टेट बैंक में गैर-निष्पादित सम्पत्ति प्रबन्ध-आसाम के बराक घाटी जिलों का एक अध्ययन
9	2008	धमेंद्ररन	तमिलनाडु में जिला केंन्द्रीय सहकारी बैंकों में गैर-निष्पादित सम्पत्तियों का एक अध्ययन
10	2006	एस.जयलक्ष्मी	भारत में सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों में गैर-निष्पादित सम्पत्ति प्रबन्ध का एक अध्ययन

उपर्युक्त शोध-पत्रों में सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों में गैर-निष्पादित सम्पत्ति का अध्ययन, वाणिज्यिक बैंकों में गैर-निष्पादित सम्पत्तियों का प्रबन्धन- दक्षिण कन्नड़ और बौदुदी जिले में एक अध्ययन, भारतीय स्टेट बैंक के वित्तीय विवरणों का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन - गैर-निष्पादित सम्पत्तियों के विशेष सन्दर्भ में का अध्ययन किया गया है, परंतु हमारे द्वारा इस शोध-पत्र के माध्यम से सिर्फ मध्यप्रदेश में सार्वजनिक एवं निजी बैंकों के द्वारा दिए गए कृषि ऋणों में गैर-निष्पादित सम्पत्तियों की स्थिति का अध्ययन किया गया है एवं मध्यप्रदेश की बैकों को गैर-निष्पादित सम्पत्तियों के सम्बन्ध में सुझाव दिए गए हैं।

शोध की परिकल्पना

प्रस्तुत शोध की परिकल्पना यह है कि सार्वजनिक क्षेत्र के द्वारा दिए गए कृषि ऋण में गैर-निष्पादित सम्पत्तियाँ अधिक हैं।

शोध के उद्देश्य

मध्यप्रदेश में सार्वजनिक बैकों के द्वारा दिए गए कृषि ऋण का अध्ययन करना।

मध्यप्रदेश में निजी बैकों के द्वारा दिए गए कृषि ऋण का अध्ययन करना।

मध्यप्रदेश में सार्वजनिक बैकों के द्वारा दिए गए कृषि ऋण में गैर-निष्पादित सम्पत्तियों की स्थिति का अध्ययन करना।

मध्यप्रदेश में निजी बैकों के द्वारा दिए गए कृषि ऋण में गैर-निष्पादित सम्पत्तियों की स्थिति का अध्ययन करना।

शोध परिकल्पना का परीक्षण करना।

प्रस्तुत शोध में ज्ञात समस्याओं के समाधान हेतु सुझाव देना।

शोध का क्षेत्र

प्रस्तुत शोध पत्र में सिर्फ मध्यप्रदेश में सार्वजनिक बैंकों एवं निजी बैंकों कें द्वारा दिए गए कृषि ऋण में गैर-निष्पादित सम्पत्तियों का ही अध्ययन किया गया है तथा यह अध्ययन सिर्फ वर्ष 2011-12 से 2015-16 तक के कृषि ऋणों में गैर-निष्पादित सम्पत्तियों को ही शामिल किया गया है।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध पत्र की प्रविधि संगणना प्रविधि है। यह शोध पत्र पूर्णतः द्वितीयक समंकों पर आधारित है। इन समंकों को राज्य स्तरीय बैंकिंग समिति, रिर्जव बैंक ऑफ़ इण्डिया की वेबसाईट, पत्रिकाओं एवं बैंकिंग विषय पर पूर्व में किए गए शोध पत्रों से लिया गया है। यह शोध कार्य मध्यप्रदेश में कार्यरत सार्वजनिक बैंकों एवं निजी बैंकों के 5 वर्षों 2011-12 से 2015-16 के राज्य स्तरीय बैंकिंग समिति मध्यप्रदेश से प्राप्त समंकों पर निरपेक्ष विश्लेषण में प्रवृत्ति विश्लेषण, सापेक्ष विश्लेषण में अनुपात विश्लेषण एवं सांख्यिकी विश्लेषण में विचरण गुणक के आधार पर किया गया है।

विश्लेषण

निरपेक्ष विश्लेषण

निरपेक्ष विश्लेषण के अंतर्गत प्रवृत्ति विश्लेषण द्वारा कृषि ऋण एवं कृषि ऋण में गैर-निष्पादित सम्पत्तियों के घटने एवं बढ़ने की प्रवृत्तियों का विश्लेषण किया गया है :-

सार्वजनिक बैंकों के कृषि ऋण एवं गैर-निष्पादित सम्पत्तियों का प्रवृत्ति विश्लेषण

क्र.	वर्ष	कृषि ऋण	प्रवृत्ति	पिछले वर्ष की तुलना में कमी या वृद्धि		गैर-निष्पादित सम्पत्तियाँ	प्रवृत्ति	पिछले वर्ष की तुलना में कमी या वृद्धि	
				राषि	प्रतिशत			राषि	प्रतिशत
1	2011-12	2384024	100	0	0	184756	100	0	0
2	2012-13	2974601	124.77	590577	24.77	210384	113.87	25628	13.87
3	2013-14	3307176	138.72	332575	11.18	244702	132.45	34318	16.31
4	2014-15	3616198	151.68	309022	9.34	254461	137.73	9759	3.99
5	2015-16	4055290	170.10	439092	12.14	278796	150.90	24335	9.56

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि समस्त सार्वजनिक बैंकों के द्वारा वर्ष 2015-2016 में सबसे अधिक कृषि ऋण दिया गया है जिसकी प्रवृत्ति 170.10 है और सभी सार्वजनिक बैंकों की कुल गैर-निष्पादित सम्पत्तियाँभी वर्ष 2015-2016 में ही सबसे अधिक है जिसकी प्रवृत्ति 150.90 है।

निजी बैंकों के कृषि ऋण एवं गैर-निष्पादित सम्पत्तियों का प्रवृत्ति विश्लेषण :

क्र.	वर्ष	कृषि ऋण	प्रवृत्ति	पिछले वर्ष की तुलना में	गैर-निष्पादित	प्रवृत्ति	पिछले वर्ष की तुलना में

				कमी या वृद्धि		सम्पत्तियाँ		कमी या वृद्धि	
				राशि	प्रतिशत			राशि	प्रतिशत
1	2011-12	263838	100	0	0	2170	100	0	0
2	2012-13	287410	108.93	23572	8.93	5423	249.91	3253	149.91
3	2013-14	335787	127.27	48377	16.83	8428	388.39	3005	55.41
4	2014-15	475192	180.11	139405	41.52	8145	375.35	-283	-3.36
5	2015-16	615007	233.10	139815	29.42	12463	574.33	4318	53.01

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि समस्त निजी बैंकों के द्वारा वर्ष 2015-2016 में सबसे अधिक कृषि ऋण दिया गया है जिसकी प्रवृत्ति 233.10 है एवं सभी निजी बैंकों की कुल गैर-निष्पादित सम्पत्तियाँ भी वर्ष 2015-2016 में सबसे अधिक है जिसकी प्रवृत्ति 574.33 है।

सापेक्ष विश्लेषण

सापेक्ष विश्लेषण में प्रति 100 रुपये के ऋण पर गैर-निष्पादित सम्पत्तियों का प्रतिशत निकाला गया है :

$$\frac{\text{गैर-निष्पादित सम्पत्तियाँ}}{\text{ऋण}} \times 100$$

क्र.	बैंकों के नाम	2011-12	2012-13	2013-14	2014-15	2015-16	कुल अनुपात	औसत अनुपात
1	इलाहाबाद बैंक	11.03	15.63	17.27	13.01	9.17	66.11	13.22
2	आंध्रा बैंक	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
3	बैंक ऑफ़ बड़ौदा	4.00	3.89	4.61	7.60	10.01	30.12	6.02
4	बैंक ऑफ़ इण्डिया	3.58	1.70	1.50	2.45	3.12	12.36	2.47
5	बैंक ऑफ़ महाराष्ट्र	5.24	6.12	4.49	4.55	3.02	23.43	4.69
6	केनरा बैंक	2.61	3.75	4.64	5.08	4.68	20.77	4.15
7	सेंट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया	3.14	2.61	4.01	3.85	5.21	18.81	3.76
8	कारपोरेशन बैंक	7.14	3.38	2.32	0.95	1.72	15.51	3.10
9	देना बैंक	10.87	12.00	15.45	17.01	16.70	72.04	14.41
10	आईडीबीआई बैंक	7.00	11.70	21.98	2.39	30.07	73.15	14.63
11	इंडियन बैंक	5.40	3.75	5.17	0.00	6.60	20.91	4.18
12	इंडियन ओवरसीज बैंक	5.81	2.67	0.82	1.68	1.42	12.40	2.48
13	ओरिएंटल बैंक ऑफ़ कॉमर्स	12.73	14.36	21.73	21.61	13.61	84.04	16.81
14	पंजाब एण्ड सिंध बैंक	2.64	3.10	12.92	16.87	18.70	54.23	10.85
15	पंजाब नेशनल बैंक	4.30	4.97	5.26	2.73	1.96	19.23	3.85
16	सिंडिकेट बैंक	6.60	13.66	14.34	18.01	24.25	76.85	15.37
17	यूको बैंक	4.02	3.29	3.90	7.89	20.29	39.38	7.88
18	यूनियन बैंक ऑफ़ इंडिया	29.42	21.52	17.05	11.43	8.73	88.14	17.63
19	यूनाइटेड बैंक ऑफ़	0.45	0.46	1.41	0.25	0.00	2.56	0.51

	इंडिया							
20	विजया बैंक	7.89	6.45	7.57	4.76	4.10	30.77	6.15
21	भारतीय महिला बैंक	_	_	_	0.00	0.00	0.00	0.00
	कुल वाणिज्यिक बैंक	6.39	5.44	5.85	5.52	6.62	29.82	152.16
22	स्टेट बैंक आॅफ हैदराबाद	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
23	स्टेट बैंक ऑफ़ मैसूर	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
24	स्टेट बैंक ऑफ़ पटियाला	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
25	स्टेट बैंक ऑफ़ ट्रावनकोर	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
26	स्टेट बैंक ऑफ़ जयपुर	67.18	36.20	36.20	36.20	0.00	175.77	35.15
27	स्टेट बैंक ऑफ़ इंडिया	10.31	10.61	10.69	10.49	7.49	49.58	9.92
	कुल एसबीआई ग्रुप	10.33	10.63	10.71	10.51	7.49	49.67	45.07
	कुल सार्वजनिक क्षेत्र बैंक	7.75	7.07	7.40	7.04	6.87	36.13	7.23
28	एचडीएफसी बैंक	0.53	0.47	2.11	1.62	2.25	6.98	1.40
29	आईसीआईसीआई बैंक	0.11	3.70	3.63	2.17	2.07	11.68	2.34
30	इंडसइंड बैंक लिमिटेड	0.29	1.34	1.20	6.65	0.00	9.48	1.90
31	आईएनजी वैष्य लिमिटेड	2.67	2.67	2.67	0.00	0.00	8.01	1.60
32	कर्नाटक बैंक लिमिटेड	0.00	0.00	0.06	0.00	0.00	0.06	0.01
33	लक्ष्मी विलास बैंक लिमिटेड	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
34	फेडरल बैंक लिमिटेड	5.75	0.00	0.08	0.17	0.00	5.99	1.20
35	जम्मू एण्ड कश्मीर बैंक	79.81	24.41	24.41	572.73	0.00	701.36	140.27
36	करूर वैश्य बैंक	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
37	साउथ इंडियन बैंक	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
38	ऐक्सिस बैंक	3.22	3.20	1.39	0.56	0.99	9.35	1.87
39	सिटी यूनियन बैंक	_	_	_	0.00	0.00	0.00	0.00
40	धन लक्ष्मी बैंक	_	_	_	0.00	0.00	0.00	0.00

41	कोटक महिंद्रा बैंक	_	_	_	0.00	0.00	0.00	0.00
42	रत्नाकर बैंक	_	_	_	0.00	0.00	0.00	0.00
43	यस बैंक	_	_	_	0.00	0.00	0.00	0.00
44	स्टैण्डर्ड चार्टर्ड बैंक	_	_	_	0.00	0.00	0.00	0.00
45	सिटी बैंक	_	_	_	0.00	0.00	0.00	0.00
46	बंधन बैंक	_	_	_	0.00	0.00	0.00	0.00
	कुल निजी बैंक	0.82	1.89	2.51	1.71	2.03	8.96	150.59

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि सार्वजनिक बैंकों में वर्ष 2011-2012 में प्रति 100 रपये के कृषि ऋण पर अन्य वर्षों की तुलना में 7.75 रुपये सबसे अधिक गैर-निष्पादित सम्पत्तियाँ है तथा निजी बैंकों में वर्ष 2013-2014 में प्रति 100 रुपये के कृषि ऋण पर अन्य वर्षों की तुलना में 2.51 रुपये सबसे अधिक गैर-निष्पादित सम्पत्तियाँ है।

परंतु यदि सार्वजनिक बैंकों एवं निजी बैंकों की तुलना की जाए तो तुलनात्मक वर्ष2011-12 से 2015-16 के पाँच वर्षों के कुल प्रति 100 रुपये के कृषि ऋण पर सार्वजनिक बैंकों की गैरनिष्पादित सम्पत्तियाँ 36.13 रुपये है एवं निजी बैंकों की गैर-निष्पादित सम्पत्तियाँ 8.96 रुपये ही है।

अतः उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि तुलनात्मक वर्ष 2011-12 से 2015-16 के पाँच वर्षों में निजी बैंकों की तुलना में सार्वजनिक बैंकों की गैरनिष्पादित सम्पत्तियाँ अधिक है।

सांख्यिकी विश्लेषण

सांख्यिकी विश्लेषण के अंतर्गत समंकों में परिवर्तनशीलता कितनी है यह ज्ञात करने के लिए विचरण गुणक का प्रयोग किया गया है :

सार्वजनिक बैंकों के कृषि ऋण एवं गैर-निष्पादित सम्पत्तियों का विश्लेषण

वर्ष	कृषि ऋण (x)	(x- Mean) (x-3267458) Dx	Dx^2	गैर निष्पादित संपत्तियां (x)	(x- Mean) (x-234620) Dx	Dx^2
2011-12	2384024	-883434	780455632356	184756	-49864	2486418496
2012-13	2974601	-292857	85765222449	210384	-24236	587383696
2013-14	3307176	39718	1577519524	244702	10082	101646724
2014-15	3616198	348740	1.2162E+11	254461	19841	393665281
2015-16	4055290	787832	6.20679E+11	278796	44176	1951518976
dqy			**1610097222153**			**5520633173**
Standard Deviation	$SD = \sqrt{Edx2/n}$ $SD = \sqrt{1610097222153/5}$ $SD = \sqrt{3.22019E+11}$ SD = 567467.5713			$SD = \sqrt{Edx2/n}$ $SD = \sqrt{5520633173/5}$ $SD = \sqrt{1104126635}$ SD = 33228.40102		
Co-Efficient	$CV = \frac{SD}{Mean} \times 100$			$CV = \frac{SD}{Mean} \times 100$		

of Variation	$CV = \frac{567467.5713}{3267458} X\ 100$ CV = 17.3672502	$CV = \frac{33228.40102}{234620} X\ 100$ CV = 14.16265849

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि सार्वजनिक बैंकों के कृषि ऋणों का को-एफिसिएंट ऑफ़ वेरिएशन 17.37 है तथा सार्वजनिक बैंकों की गैर-निष्पादित सम्पत्तियों का को-एफिसिएंट ऑफ़ वेरिएशन 14.16 है। अतःसार्वजनिक बैंकों की गैर-निष्पादित सम्पत्तियाँ में कृषि ऋणों की तुलना में परिवर्तनशीलता कम है।

निजी बैंकों के कृषि ऋण एवं गैरनिष्पादित सम्पत्तियों का विश्लेषण :

वर्ष	कृषि ऋण (x)	(x- Mean) (x-395447) Dx	Dx^2	गैर निष्पादित संपत्तिया (x)	(x- Mean) (x-7326) Dx	Dx^2
2011-12	263838	-131609	17320928881	2170	-5156	26584336
2012-13	287410	-108037	11671993369	5423	-1903	3621409
2013-14	335787	-59660	3559315600	8428	1102	1214404
2014-15	475192	79745	6359265025	8145	819	670761
2015-16	615007	219560	48206593600	12463	5137	26388769
dqqy			**87118096475**			**58479679**
Standard Deviation	$SD = \sqrt{Edx2/n}$ $SD = \sqrt{87118096475/5}$ $SD = \sqrt{17423619295}$ SD = 131998.5579			$SD = \sqrt{Edx2/n}$ $SD = \sqrt{58479679/5}$ $SD = \sqrt{11695935.8}$ SD = 3419.932134		
Co-Efficient of Variation	$CV = \frac{SD}{Mean} X\ 100$ $CV = \frac{131998.5579}{395447} X\ 100$ CV = 33.37959946			$CV = \frac{SD}{Mean} X\ 100$ $CV = \frac{3419.932134}{7326} X\ 100$ CV = 46.68339477		

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि निजी बैंकों के कृषि ऋणों का को-एफिसिएंट ऑफ़ वेरिएशन 33.38 है तथा निजी बैंकों की गैर-निष्पादित सम्पत्तियों का को-एफिसिएंट ऑफ़ वेरिएशन 46.68 है। अतः निजी बैंकों के कृषि ऋणों की तुलना में गैरनिष्पादित सम्पत्तियों में परिवर्तनशीलता अधिक है।

अतः उपर्युक्त तालिकाओं से स्पष्ट होता है कि तुलनात्मक वर्ष 2011-12 से 2015-16 के पाँच वर्षों में सार्वजनिक बैंकों एवं निजी बैंकों के कृषि ऋण में निजी बैंकों के कृषि ऋण में परिवर्तनशीलता अधिक है, परंतु सार्वजनिक बैंकों एवं निजी बैंकों की गैरनिष्पादित सम्पत्तियों में निजी बैंकों की गैर-निष्पादित सम्पत्तियों में परिवर्तनशीलता अधिक है।

सुझाव : इस शोध पत्र से ज्ञात हो चुका है कि मध्यप्रदेश में सार्वजनिक एवं निजी बैकों के द्वारा दिए गए कृषि ऋण में सार्वजनिक बैंकों में गैर-निष्पादित सम्पत्तियाँ अधिक हैं। अतः मध्यप्रदेश की सार्वजनिक बैकों को दिए गए सुझाव निम्न हैं -

- सार्वजनिक बैंकों को ऋण वसली नीति बनाना चाहिए तथा गैर-निष्पादित सम्पत्तियों में कमी लाने का प्रयास करना चाहिए।
- सार्वजनिक बैंकों को वसूली प्रकोष्ठ की स्थापना करना चाहिए तथा प्रकोष्ठ के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को ऋण एवं ब्याज कि वसूली में तीव्रता लानी चाहिए।
- सार्वजनिक बैंकों को ग्रामीण क्षेत्रों में ऋण प्रदान करते समय ऋणी का चरित्र, क्षमता एवं पूँजी से सम्बंधित सम्पूर्ण जानकारी प्राप्त कर ले।
- सार्वजनिक बैंकों के द्वारा कृषि ऋण देते समय यदि मौसमी प्रकृति का या अधिक जोखिम प्रकृति का है तो ऐसे ऋण की वसूली में ज्यादा सर्तकता व तीव्रता दिखाना चाहिए।
- सार्वजनिक बैंकों के द्वारा कृषि ऋण देते समय परियोजना का मूल्यांकन विषेषज्ञों के माध्यम से करवाना चाहिए एवं कृषि ऋण की उचित मात्रा ही स्वीकृत की जानी चाहिए।

निष्कर्ष

गैर-निष्पादित संपत्तियां बैकिंग क्षेत्र के लिए गहन चिंतन का विषय है। गैर-निष्पादित सम्पत्तियों में बैंकों के द्वारा दिए गए ऋण का मूलधन एवं उसका ब्याज को शामिल किया जाता है। प्रस्तुत शोध पत्र में गैर-निष्पादित सम्पत्तियों के प्रकार एवं सार्वजनिक एवं निजी क्षेत्र के बैंकों में से किन में गैर-निष्पादित सम्पत्तियाँ अधिक है तथा जिन क्षेत्र के बैंकों की गैर-निष्पादित सम्पत्तियाँ अधिक हैं, उन्हें आवश्यक सुझाव दिया गया है।

इस शोध पत्र का प्रमुख उद्देश्य यह ज्ञात करना था कि मध्यप्रदेश में सार्वजनिक एवं निजी बैंकों के द्वारा दिए गए कृषि ऋणों में कौन सी बैंकों मे गैर-निष्पादित सम्पत्तियाँ अधिक है तथा हमारे इस शोध पत्र से ज्ञात होता है कि मध्यप्रदेश में सार्वजनिक एवं निजी बैंकों के द्वारा दिए गए कृषि ऋणों में सार्वजनिक बैंकों में गैर-निष्पादित सम्पत्तियाँ अधिक है। अतः अंत में हमारे शोध पत्र की परिकल्पना सार्वजनिक क्षेत्र के द्वारा दिए गए कृषि ऋणों में गैर-निष्पादित सम्पत्तियाँ अधिक है सही सिद्ध हो गयी है।

सन्दर्भ ग्रंथ

- *बैंक क्रेडिट मैनेजमेंट-एस मुराली एवं के आर सुब्ब कृष्णहिमालय पब्लिशिंग हाउस*
- *रिसर्च आन एनपीए मैनेजमेंट-वंदना जोशी-एलएपी लम्बर्ट एकेडमिक पब्लिशिंग*
- *रिसर्च मेथोडोलोजी-वेयने गोडडास-जुटा ऐकेडमिक पब्लिकेशन*
- *बैंकिंग फ्राटियर मैगज़ीन*

www.dif.mp.gov.in
www.slbcmadhyapradesh.in
http://www.slideshare.net
www.iosrjournals.org
www.ijemr.net
www.ijetmas.com